7105

तित्थयर

जैन भवन

वर्ष ४ अंक ६ : अक्टूबर १९८०

बनारसी साड़ी

इण्डियन सिल्क हाउस

कॉलेज स्ट्रीट मार्केट • कलकत्ता-१२

PRAKASH TRADING COMPANY

12 INDIA EXCHANGE PLACE
CALCUTTA-700001

Gram : PEARLMOON

Telephone : 22-4110
22-3323

THE BIKANER WOOLLEN MILLS

Manufacturer and Exporter of Superior Quality Woollen Yarn/Carpet Yarn and Superior Quality Handknotted Carpets

Office and Sales Office :

BIKANER WOOLLEN MILLS
Post Box No. 24
Bikaner, Rajasthan
Phones : Off. 3204
Res. 3356

Main Office

4 Mir Bhor Ghat Street
Calcutta-700007
Phone : 33-5969

Branch Office

The Bikaner Woollen Mills
Srinath Katra : Bhadhoi
Phone : 378

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्र

वर्ष ४ : अंक ६

अक्टूबर १९८०

☐

संपादन

गणेश ललवानी

राजकुमारी बेगानी

☐

आजीवन : एक सौ एक

वार्षिक शुल्क : दस रुपये

प्रस्तुत अंक : एक रुपया

☐

प्रकाशक

जैन भवन

पी - २५ कलाकार स्ट्रीट

कलकत्ता-७००००७

☐

मुद्रक

सुराना प्रिन्टिंग वर्क्स

२०५ रवीन्द्र सरणी

कलकत्ता-७००००७

सूची

कलकत्ता के जैन मन्दिर
और एक विस्मृत शिल्पी १६५

श्रीपाल १७६

हिन्दी जैन साहित्य १८४

जैन पत्र-पत्रिकाएँ : कहाँ/क्या १९२

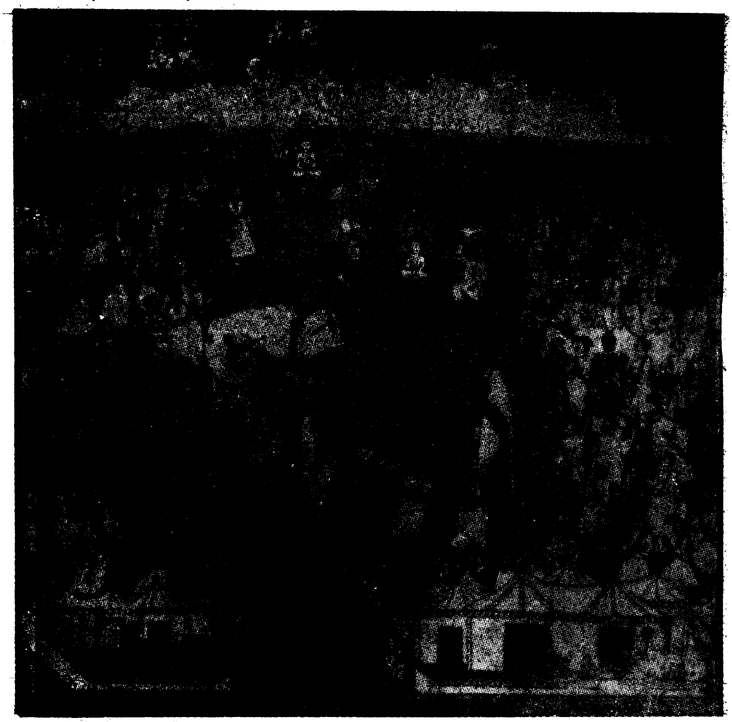

गौड़ी पार्श्वनाथ
शिल्पी गणेश मुसव्वर

कलकत्ता के जैन मन्दिर और एक विस्मृत शिल्पी

कलकत्ते के जैन मन्दिर में हमने श्वेताम्बर पंचायती मन्दिर का उल्लेख किया था। इस मन्दिर में करीब सौ वर्ष पुराने कुछ चित्र हैं जो कि विशेष रूप से हमारी दृष्टि को आकृष्ट करते हैं। इन चित्रों को अंकित करने वाले हैं शिल्पी गणेश मुसव्वर। आप जयपुर के निवासी थे। सम्भवतः कलकत्ते के जैन समाज से आमंत्रित होकर वे यहाँ आए और चित्रों का अंकण किया। इस मन्दिर के अतिरिक्त कलकत्ता के शीतलनाथ मन्दिर के लिए भी उन्होंने अनेक चित्र अंकित किए जिसमें प्रमुख एवं उल्लेखयोग्य है कार्तिक महोत्सव पर निकलने वाले जुलूस का भव्य चित्र। आज से सौ वर्ष पूर्व यह जुलूस किस प्रकार निकलता था उसका परिचय हम इस चित्र द्वारा प्राप्त करते हैं। इतना ही नहीं उस समय के विशिष्ट व्यक्तियों के चित्र भी इस चित्र में अंकित है। इन दो मन्दिरों के ही नहीं आगरा, लखनऊ, अजीमगंज, जियागंज आदि के मन्दिरों के लिए भी उन्होंने चित्र अंकित किए हैं। खेद है शिल्पी के विषय में हम कुछ अधिक नहीं जान सके हैं। जयपुर निवासी होने के कारण उनकी कलम अवश्य जयपुरी कलम की है। फिर भी चित्रों की रेखाएँ, रंग और उपस्थापन में उनकी स्व-विशिष्टताएँ भी परिस्फुट हुई हैं। अवश्य ही इनके चित्रों का एक एलबम निकालना चाहिए। मन्दिर के अधिकारियों का कई बार इस ओर ध्यान आकृष्ट करवाया गया किन्तु, विभिन्न कारणोंवश यह प्रकाशन सम्भव न हो सका। भारतीय ललित कला अकादमी क्या इस विषय में कुछ नहीं कर सकती? हम अब जैन श्वेताम्बर मन्दिर एवं शीतलनाथ मन्दिर के गणेश मुसव्वर द्वारा अंकित चित्रों का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। श्वेताम्बर पंचायती मन्दिर के चित्रों के नीचे तो समय का निर्देशन है किन्तु, शीतलनाथ मन्दिर के चित्रों में समय का निर्देशन नहीं है। लेकिन श्वेताम्बर मन्दिर के निर्देशन के आधार पर यह तो कहा ही जा सकता है कि दस बारह वर्षों तक जब वे कलकत्ते में रहे उसी समय वे शीतलनाथ मन्दिर के चित्र भी अंकित किए होंगे। उन दोनों मन्दिरों के चित्र हम मन्दिर खुला रहने के समय जाकर देख सकते हैं।

जैन श्वेताम्बर पंचायती मन्दिर के चित्र

(१) गौड़ी पार्श्वनाथ (३१″×३०″): इस चित्र में सात सूँड वाले हाथी की पीठ पर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजित है। समीप ही

पूजा द्रव्य लिए खड़े हैं भक्त उपासक और उपासिकाएँ। चित्र के ऊपरी हिस्से में हैं छः देव विमान। देवगण विमान से पुष्प वृष्टि कर रहे हैं। नीचे की ओर आवास स्थान एवं तम्बू आदि है। परिचय फलक में लिखा है कलम गणेश मुसव्वर, निवास जयपुर। कलकत्ता में अंकित। सम्वत् १६२५ (ई० सन् १८६८) कार्तिक पूर्णिमा शनिवार। श्रीमाल जातीय फोफलिया रीघुलाल तस्य पुत्र शिखरचन्द्र द्वारा कारित।

(२) राणकपुर तीर्थ (३०''×३०''): चारों ओर शिखरबद्ध देवकुलिका के मध्य विशाल दुमंजिले जिनालय के नीचे तल में सर्वतोभद्र चौमुखी प्रतिमा है। ऊपर तल में तीर्थंकर की एक प्रतिमा है। सामने दो छोटे मन्दिर हैं एवं दाहिनी ओर धर्मशाला है। ऊपरी भाग में मेघों के मध्य विमान स्थित देवता दिखाई दे रहे हैं। सम्वत् १६२५ (ई० सन् १८६८) में अंकित।

(३) अष्टापद महातीर्थ (३०"×३१"): भरत चक्रवर्ती निर्मित स्वर्णमय प्रासाद में दो-चार-आठ-दश के क्रम से चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ अंकित हैं। प्रान्त भाग में एक सौ भाइयों के चरणपादुकायुक्त स्तूप हैं। जिनालय में रावण एवं मन्दोदरी नृत्य कर रहे हैं। महावीर शिष्य इन्द्रभूति गौतम सूर्य-किरणों का अवलम्बन लेकर पर्वतारोहण कर रहे हैं। वे चैत्यवंदन करते हुए और तीर्यंक जृम्भक देव को प्रतिबोध देते हुए जा रहे हैं। सीढ़ियों के नीचे योगध्यान निरत वृद्ध तापसगण हैं। भागीरथी के तट पर एक उपासक (शायद शिखरचन्द ही होंगे जिन्होंने छवि अंकन करवायी) हाथ जोड़े खड़े हैं। अष्टापद पर्वत के नीचे इन्द्रभूति साधुओं सहित तापसों को उपवास का पारना करा रहे हैं। सम्वत् १६२५ (ई० सन् १७६८) में अंकित।

(४) केशरिया तीर्थ (३१"×३१"): धुलेवा स्थित भगवान ऋषभदेव का मन्दिर १२ जिनालयों के मध्य बहुत सुन्दर ढंग से अंकित है। उसका सुनहला रंग है। मन्दिर के बीच भक्तजन हैं। प्राकार के सम्मुख दो मन्दिर और एक दुमंजिला मकान है। नौबतखाना और दरवाजों के दोनों ओर हाथी हैं। मन्दिर के बाहर नगर अट्टालिका और दाधावाड़ी है। ऊपर मेघों के मध्य देव विमान है। सम्वत् १६२६ (ई० सन् १८६६) में अंकित।

(५) सिद्धाचल महातीर्थ (३१"×४५"): इसमें शत्रुंजय स्थित विमल वसही और उसके चारों ओर स्थित मन्दिरों का समूह दिखाया गया है। अद्भुत बाबा की विशाल प्रतिमा के नीचे मोती वसही है और बायीं ओर नयी वसही। म य में पर्वतारोहण पथ का सामान्य दृश्य है। अधित्यका में छोटा मन्दिर है और नीचे ग्राम व धर्मशालाएँ हैं। सम्वत् १६२६ (ई० सन् १८६६) में अंकित।

(६) हस्तिनापुर तीर्थ (३२"×३१") : दुग्ध धवल धर्मशाला के मध्य प्रतापचन्द्र पारसन द्वारा निर्मित नवीन जिनालय का चित्र है। गर्भगृह में तीन प्रतिमाएँ हैं। दोनों पार्श्व की कुलिका में एक-एक कर दो प्रतिमाएँ हैं। प्रांगण में भक्तजन नृत्य गीत कर रहे हैं। धर्मशाला के बायीं ओर उद्यान है। पीछे छोटे-छोटे दो पहाड़ हैं। पहाड़ के ऊपर जिन मन्दिर है और नीचे एक शिवालय है। सम्मुख है जल का प्रवाह। अन्तरीक्ष से देवगण विमान से पुष्पवर्षा कर रहे हैं। सम्वत् १९२५ (ई० सन् १८६८) में अंकित।

(७) चम्पापुरी तीर्थ (३०" × ३०") : नाले के निकट ग्राम के मध्य विस्तृत भू-खण्ड पर अवस्थित धर्मशाला में दो दोमंजिला वासुपूज्य जिनालय है। आकाश से देवगण पुष्पवर्षा कर रहे हैं। सम्वत् १९२५ (ई० सन् १८६८) में अंकित।

८) पावापुरी तीर्थ (३०"×३१") : पद्म सरोवर स्थित सुप्रसिद्ध जल मन्दिर और सामने का वर्त्तुलाकार समवसरण मन्दिर है। सम्मुख है धर्मशाला और बगीचा। मन्दिर के साथ नवरतन धर्मशाला है। इसके सामने विशाल-सा मकान है। राह में लोग हैं, हाथी हैं और घोड़े हैं। ऊपर विमान से पुष्प-वर्षा हो रही है। सरोवर के सम्मुख दिगम्बर मन्दिर के पास जहाँ नाहरों की दीनशाला है वहाँ तम्बू बाँधे हैं। सम्वत् १९२५ (ई० सन् १८६८) में अंकित।

(९) मुनि सुव्रत (३१॥" × ३१") : २०वें तीर्थंकर मुनि सुव्रत स्वामी का विशाल चित्र है। दोनों ओर खड्गासन स्थित प्रतिमा है। नीचे सम्मुख भाग में गौतम स्वामी और दोनों ओर दादा गुरुदेव के चरण और भैरव मन्दिर है। सम्वत् १९३५ (ई० सन् १८७८) में अंकित।

(१०) तारंगा तीर्थ (३०"×३०") : तारंगा पर्वत के ऊपर भगवान अजितनाथ का स्वर्ण चित्र। चार दिगम्बर मन्दिर और कई श्वेताम्बर देव कुलिकाएँ दिखाई गयी हैं। दो श्वेताम्बर और दो दिगम्बर धर्मशालाएँ अंकित हैं। साधुगण एवं यात्री इधर-उधर घूम रहे हैं। एक सरोवर भी दिखाई पड़ता है। आकाश से देवगण पुष्पवृष्टि कर रहे हैं। पहाड़ की तलहटी में बना मन्दिर भी दिखलाया है। संवत् १९२५ (ई० सन् १८६८) में अंकित।

(११) सम्मेद शिखर तीर्थ (२७"×२१") : गिरीडीह और मधुवन स्थित धर्मशालाएँ, मन्दिर, शिखर पहाड़ पर जाने का पथ, जल-मन्दिर आदि का

स्वर्णिम चित्र अंकित है। पर्वत पर २० तीर्थंकरों की टूकें और शिखर बने हुए हैं। सम्वत् १६२५ (ई० सन् १८६८) में अंकित।

शीतलनाथ मन्दिर के चित्र

जैन श्वेताम्बर पंचायती मन्दिर के चित्र जहाँ तीर्थ सम्बन्धी हैं वहाँ शीतलनाथ मन्दिर के चित्र मुख्यतः श्रावक-श्राविकाओं का जीवन, साधु-यति और पुराणकथाओं पर आश्रित है।

(१) पद्मावती और सती दमयन्ती (४६''×१७'') : पद्मावती—रानी पद्मावती दीक्षा ग्रहण के लिए राजा का आदेश ग्रहण कर रही हैं। आदेश प्राप्त कर पालकी में चढ़कर दीक्षा लेने जा रही है। पालकी के सम्मुख हाथी पर चढ़कर राजा चल रहे हैं। तीर्थंकर भगवान का समोसरण और उपदेश सभा बनी हुई है। पद्मावती अलंकारादि राजा के हाथों सौंपकर केश लोचकर साध्वी बन रही हैं।

दमयन्ती—द्यूत क्रीड़ा में नल पराजित हो रहे हैं। एक वस्त्र में नल-दमयन्ती वन-गमन कर रहे हैं। वृक्ष तले निद्रित दमयन्ती का परित्याग कर नल जा रहे हैं। दमयन्ती विभिन्न विपदाओं के सम्मुखीन हो रही हैं। किन्तु पंच परमेष्ठी मंत्र का स्मरण कर समस्त विपदाओं से दूर हो रही हैं। पर्वत शीर्ष पर दमयन्ती तीर्थंकर मूर्त्ति का दर्शन कर रही हैं। नल-दमयन्ती का मिलन हो रहा है।

(२) भगवती और कौशल्या सती (५६''×१७'') : भगवती—उद्यान में खड़े होकर राजा-रानी दोनों साधुओं को आहार-दान दे रहे हैं। सामने पहाड़, जलाशय और जिनालय है। जिनालय अधिकांशतः पावापुरी के मन्दिर जैसा है।

कौशल्या—कौशल्या के सम्मुख राम, लक्ष्मण और सीता करवद्ध होकर खड़े हैं। तीनों ही वन जा रहे हैं।

(३) प्रभावती और सती राजीमती (४६'' × १७'') : प्रभावती—मूसला-धार वृष्टि हो रही है। राज प्रासाद जल में डूब गया है। राजा हाथ जोड़कर सती प्रभावती के सम्मुख खड़े होकर राज-प्रासाद को जल-मुक्त करने का अनुरोध कर रहे हैं। सती की प्रार्थना पर शासन देवी जल को कम कर रही हैं।

राजीमती—रैवताचल पर्वत पर वस्त्रहीना साध्वी राजीमती को देखकर उनके देवर रथनेमि चलित हो रहे हैं। राजीमती उपदेश देकर उन्हें धर्मस्थित कर रही हैं।

(४) ब्राह्मी और सुन्दरी (४६″ × १७″) : भगवान ऋषभदेव गृहस्थाश्रम के समय अपनी पुत्री ब्राह्मी को लिपि और सुन्दरी को कला की शिक्षा दे रहे हैं। ब्राह्मी के नाम पर ही प्राचीन भारत की लिपि का नाम ब्राह्मीलिपि पड़ा। चित्र में ग्रन्थादि सहित ब्राह्मी सुन्दरी को दिखाया गया है।

(५) कलावती, कुन्ती और द्रौपदी (५६″×१७″) : कलावती—भाई द्वारा भेजा हुआ कंकण ग्रहण कर रही है। जाली के छिद्रों से यह देखकर राजा शंकित होकर रानी को जो कि गर्भवती है निर्वासित कर रहे हैं। कलावती वन में पुत्र को जन्म दे रही है। वह पुत्र एक ऋषि के आश्रम में बड़ा हो रहा है। राजा को सत्य ज्ञात होता है। वे अनुतप्त होकर कलावती को राजप्रासाद में लौटा लाते हैं।

कुन्ती और द्रौपदी—सरोवर में प्रवेश करने पर नागकुमारगण पंच पाण्डवों को नागपाश में बद्ध कर रहे हैं। उनकी मुक्ति के लिए कुन्ती और द्रौपदी सरोवर तट पर खड़ी ध्यान और प्रार्थना कर रही है। हरिनैगमेषी देव आविर्भूत होकर पाण्डवों को मुक्त कर रहे हैं।

(६) मृगावती और सुलसा (४६″×१७″) : मृगावती—महावीर के साध्वी संघ की प्रमुखा चन्दनबाला सो रही है, मृगावती उनकी सेवा कर रही है। अन्धकार होते हुए भी मृगावती अपनी गुरुणी की ओर जाते हुए साँप को देखकर उन्हें सतर्क कर रही है। इस अन्धकार में भी मृगावती ने सर्प को कैसे देखा—जानने पर ज्ञात हुआ मृगावती ने केवल ज्ञान के प्रभाव से यह सब जाना है। केवल ज्ञानी की सेवा ग्रहण की यह जानकर चन्दनबाला के मन में अनुताप जागा और उन्हें भी वहीं केवल ज्ञान हो गया।

सुलसा—सुलसा भगवान महावीर की अनन्य उपासिका थी। महावीर के सुलसा की अनन्य भक्ति की प्रशंसा करने पर परिव्राजक अम्बड़ उसकी परीक्षा लेने आते हैं और ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर यहाँ तक कि जिनेश्वर रूप भी धारण कर उसे विभ्रान्त करना चाहते हैं। किन्तु सुलसा अम्बड़ के समस्त माया जाल को व्यर्थ कर देती है।

(७) श्रीपाल चरित्र [१] (४६″×१७″) : चम्पाके राजा सिंहरथ सिंहासन पर बैठे हैं, ऊपर-माय सहित श्रीपाल। सिंहरथ की आकस्मिक मृत्यु हो रही है। उनके लघुभ्राता अजितसेन ने सिंहासन पर अधिकार कर लिया है। शिशु-पुत्र को गोद में लेकर उसकी जीवन-रक्षा के लिए रानी कमलप्रभा रात्रि के अन्धकार में प्रासाद परित्याग कर वन में जा रही हैं। अजितसेन के अनुचर वहाँ

भी उसका पीछा कर रहे हैं। श्रीपाल की जीवन-रक्षा के लिए रानी कुष्ठियों के हाथों उसे सौंप रही है। व्याधि के भय से राजपुरुष बिना अन्वेषण के ही लौट रहे हैं। श्रीपाल को कुष्ठ रोग हो जाने पर श्रीपाल को कुष्ठियों के पास ही छोड़कर रानी स्वयं वैद्य के संधान में निकल रही हैं। इसी चित्र के एक तरफ उज्जयिनी-राज प्रजापाल की राजसभा दिखाई गयी है। प्रजापाल अपनी लड़कियाँ सुर सुन्दरी और मैना सुन्दरी की परीक्षा ले रहे हैं। सुर सुन्दरी पिता की गर्वोक्ति का समर्थन कर उन्हें तुष्ट कर रही है। प्रजापाल कुरू जांगालपति अरिदमन के साथ उसके विवाह की घोषणा कर रहे हैं। दूसरी ओर मैना से अपनी गर्वोक्ति का समर्थन न पाकर क्रुद्ध हो रहे हैं और भाग्य द्वारा प्रेरित कुष्ठ रोगाक्रान्त उम्बर राणा (श्रीपाल) के साथ उसका विवाह कर रहे हैं।

(८) श्रीपाल चरित्र [२] (६३″ × १७″) : मैना श्रीपाल को अपने धर्मगुरु के पास ले जा रही है। मुनिचन्द्र उन्हें सिद्धचक्र उपासना की विधि बतला रहे हैं। सिद्धचक्र की उपासना और आयम्बिल कर श्रीपाल अन्य कोढ़ियों सहित रोगमुक्त हो गए हैं। मन्दिर से बाहर निकलते ही श्रीपाल का मिलाप अपनी माँ से होता है। मैना सुन्दरी को पर पुरुष के साथ देखकर मैना सुन्दरी की माँ के मन में खेद उत्पन्न होता है। पश्चात् श्रीपाल का यथार्थ परिचय पाकर उल्लसित हो उठती है। मैना सुन्दरी के मामा उन सबको अपने आवास पर ले जाते हैं। राजा प्रजापाल भी एक दिन मैना को सुन्दर युवक के साथ अलिन्द पर बैठे देखकर विषादग्रस्त हो जाते हैं। परिचय पाकर वे भी उन्हें स्व-आवास पर ले जाते हैं। श्वसुर प्रजापाल के परिचय से परिचित होना निकृष्ट समझकर श्रीपाल अर्थोपार्जन के लिए विदेश जा रहे हैं।

(९) श्रीपाल चरित्र [३] (६५″×१७″) : श्रीपाल पर्वत पर विद्यासाधक के रूप में विद्या अर्जन कर रहे हैं। भरोच बन्दरगाह पर वे एक वृक्ष तले सोए हुए हैं, तभी धवल श्रेष्ठी के अनुचर उन्हें पकड़ने आते हैं। युद्ध होता है। युद्ध में हारकर धवल के अनुचर लौट रहे हैं। आखिर धवल स्वयं आकर उनसे अनुनय-विनय कर रहे हैं। श्रीपाल के स्पर्श करते ही जहाज चलना प्रारम्भ कर देता है। श्रीपाल को धवल अपने साथ ले लेता है। जहाज बन्दरगाह के तट पर पहुँचता है। राजकर न देने के कारण धवल को एक वृक्ष से बाँधा गया है। श्रीपाल राजा के साथ युद्ध कर उन्हें पराजित कर रहे हैं। राजा अपनी पुत्री मदन सेना का विवाह श्रीपाल के साथ कर रहे हैं

और दहेज में एक नृत्य मण्डली दे रहे हैं। धवल और श्रीपाल पुनः समुद्र यात्रा कर रहे हैं।

(१०) श्रीपाल चरित्र [४] (७६"×१७") : श्रीपाल और धवल रत्न-संचय नगरी को जा रहे हैं। समुद्र तट पर श्रीपाल नाटक देख रहे हैं। तभी जिनदास उनके पास आते हैं और मन्दिर का रुद्ध द्वार खोलने की विनती करते हैं। चक्रेश्वरी देवी के प्रभाव से श्रीपाल रुद्ध द्वार खोलते हैं। राजा मकरकेतु अपनी लड़की मदन सुन्दरी का विवाह श्रीपाल के साथ करते हैं। राजकर नहीं देने के कारण राज पुरुष धवल सेठ को पकड़कर ले जाते हैं। श्रीपाल उन्हें मुक्त करवाते हैं। फिर धवल और श्रीपाल समुद्र यात्रा पर जाते हैं। श्रीपाल की सुन्दर पत्नियाँ और धन-रत्न जब्त करने की इच्छा से धवल श्रीपाल को समुद्र में धक्का देते हैं। धवल अपना कुत्सित विचार श्रीपाल की पत्नियों के सम्मुख व्यक्त करते हैं। वे अपने सतीत्व की रक्षा के लिए चक्रेश्वरी देवी का आह्वान करती हैं। भैरव सहित चक्रेश्वरी प्रकट होती है। धवल श्रीपाल की पत्नियों की शरण ग्रहण कर प्राण दान पाता है। श्रीपाल समुद्र में गिरने पर भी धर्म के प्रभाव से बच जाते हैं और मकर की पीठ पर बैठकर कंकण देश पहुँचते हैं। समुद्र तट के एक वृक्ष के नीचे वे सोते हैं तभी राजा वसुपाल के अनुचर उन्हें राज-प्रासाद में ले जाते हैं। ज्योतिषिगणों की भविष्यवाणी के अनुसार राजा स्व-कन्या मदन मंजरी का उनसे विवाह करते हैं। धवल भी कंकण देश में आता है एवं श्रीपाल को जीवित और राजा के जँवाई रूप में देखकर भयभीत हो जाता है। वह श्रीपाल की प्रतिष्ठा नष्ट करने के लिए भाँड लोगों को दरबार में भेजता है। वे लोग दरबार में उन्हें स्वकुटुम्बी घोषित करते हैं। राजा क्रुद्ध होकर इस धोखे के लिए श्रीपाल को वध का आदेश देते हैं। किन्तु श्रीपाल की दोनों पत्नियों से समस्त कथा विदित कर वे श्रीपाल को मुक्त करते हैं एवं धवल को दण्ड देना चाहते हैं। किन्तु श्रीपाल की उदारता से धवल बच जाता है। रात्रि के समय श्रीपाल की हत्या के लिए धवल रस्सी के सहारे प्रासाद की दीवार पर चढ़ना प्रारम्भ करता है। किन्तु हाथ छूट जाने के कारण वह नीचे गिर जाता है और अपने ही छूरे से विद्ध होकर मृत्यु प्राप्त करता है।

(११) श्रीपाल चरित्र [५] (६४"×१६||") : कंकण राज श्रीपाल को कंकण के सिंहासन पर अधिष्ठित करते हैं। श्रीपाल उज्जयिनी की यात्रा कर रहे हैं। सोपारक पुर की राजकन्या तिलक मंजरी की मृत्यु हो जाने पर श्मशान पर

लाया जा रहा है। श्रीपाल सिद्ध चक्र यन्त्र का जल छिड़क कर उसे जीवित करते हैं। तिलक मंजरी के साथ श्रीपाल का विवाह हो जाता है।

(१२) श्रीपाल चरित्र [६] (६७"×१७") : श्रीपाल कुब्ज रूप धारण कर कुण्डलपुर जाते हैं एवं वीणा वादन में राजकन्या त्रैलोक्य सुन्दरी को परास्त कर उससे विवाह करते हैं। वावन रूप में ही स्वयम्वर-सभा में तिलक सुन्दरी से वरमाल्य ग्रहण करते हैं। धरापाल राज्य की राजकन्या शृङ्गार सुन्दरी की समस्या का समाधान कर उससे विवाह करते हैं। राजा पुरन्दर की राज-सभा में तेल के कड़ाह में पुतली का प्रतिबिम्ब देखकर उसे विद्ध कर जयसुन्दरी को प्राप्त करते हैं।

(१३) श्रीपाल चरित्र [७] (६६"×१७") : उज्जयिनी के बाहर श्रीपाल का शिविर लगता है। आकाश पथ से जाकर गुप्तरूप से माँ और मैना से मिलते हैं एवं उन्हें भी शिविर में ले आते हैं। श्रीपाल प्रजापाल के पास दूत भेजकर नंगे पाँव कन्धे पर कुल्हाड़ी लिए आने को कहते हैं। श्रीपाल से युद्ध में जीत नहीं सकेंगे समझकर वे इसी प्रकार आते हैं। श्रीपाल चम्पा राज्य जय करने जाते हैं।

(१४) श्रीपाल चरित्र [८] (७६"×१७") : चम्पानगरी का युद्ध क्षेत्र है। श्रीपाल शामियाने के नीचे बैठे हुए हैं। श्रीपाल युद्धरत हैं। अजितसेन पराजित हो रहे हैं। उत्सव एवं श्रीपाल का राज्याभिषेक हो रहा है। अजितसेन वैराग्य प्राप्त होकर संसार त्याग कर रहे हैं। मन्दिर में श्रीपाल और मैना सुन्दरी सिद्धचक्र यन्त्र की पूजा कर रहे हैं। अजितसेन की धर्म सभा में श्रीपाल और मैनासुन्दरी बैठे हैं।

(१५) महावीर समोसरण (६७"×१७") : चित्र के दाहिनी ओर महावीर का समोसरण है। बायीं ओर राजगृह नगर। राजा कुणिक (अजातशत्रु) महावीर की वन्दना करने सपरिवार आ रहें हैं।

(१६) गोड़ी पार्श्वनाथ (५०"×१७") : चित्र के दोनों ओर तम्बू है। विभिन्न स्थानों से आये यात्रीगण दिखाई पड़ रहे हैं। धरती में से पार्श्वनाथ प्रतिमा बाहर निकाल रहे हैं। सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर दो श्रावक उसका स्नानाभिषेक कर रहे हैं। बीच में सात सूँड़ वाला हाथी है। आकाश से देव विमान पुष्प वर्षा रहे हैं।

(१७) दशार्णभद्र का तीर्थंकर वन्दन (६६"×१७") : बायीं ओर भगवान महावीर का समोसरण लगा है। दाहिनी ओर दशार्णभद्र राजमहल से समवसरण

जाने को निकल रहे हैं। दशार्णभद्र के मन में वैभव का अहंकार हो रहा है। उसी गर्व को चूर्ण करने के लिए इन्द्र स्वयं का परिवार लेकर महावीर वन्दना को आ रहे हैं। इन्द्र के वैभव के सम्मुख दशार्णभद्र का वैभव फीका हो जाता है। दशार्णभद्र के मन का अहंकार दूर हो जाता है। वे महावीर से दीक्षित होते हैं।

(१८) कार्तिक महोत्सव पर निकलने वाला जुलूस (६२"×१७") : चित्र में सर्वप्रथम झण्डे वहन के लिए लोग दिखाई पड़ते हैं। उसके बाद है नौवत खाना जिसमें कई लोग बैठे वाद्ययंत्र बजा रहे हैं। तदुपरान्त दोनों ओर है घुड़सवारों की पंक्तियाँ। उसके पीछे है छड़ीदार, बड़ी इन्द्रध्वजा, छोटी इन्द्रध्वजा. पालकी, सिंहासन, माला, कल्पवृक्ष, घण्टेदार शिविका। बीचमें श्री महताबचन्द और बलदेव दास दिखाई दे रहे हैं। उनके पीछे चलती है छोटे बच्चों की गाड़ियाँ। इनके पीछे चल रहे हैं जौहरी साथ वाले, मुर्शिदाबाद वाले और मारवाड़ी और कच्छी गुजराती श्रावक गण। इनमें सबसे पहले चल रहे हैं हाथ में सोने की छड़ी लिए मन्दिर के ट्रष्टी गण। उनमें एक का नाम है भैरूदान, दूसरे का भगवान दास। अन्त में है वह रजत सुवर्ण मण्डित पालकी जिसमें भगवान धर्मनाथ स्वामी की मूर्त्ति विराजमान है। भगवान के सम्मुख पुजारी गण करबद्ध होकर खड़े हैं। पालकी वहन करने वालों में हैं जौहरी रायबहादुर बद्रीदास, कल्लूमल, शिखरचन्द आदि। पालकी के पीछे हैं जिन-कल्याण सूरि और यति और श्रावक वृन्द।

(१९) जम्बू स्वामी (५०"×१७") : राजगृह के समृद्धिशाली श्रेष्ठी का गृह दृश्य। समय रात्रि। श्रेष्ठी पुत्र आठ नव-विवाहित पत्नियों को वैराग्यमय उपदेश दे रहे हैं एवं श्रमण दीक्षा लेने को उत्साहित कर रहे हैं। पार्श्व कक्ष में प्रभव चोर चोरी करने आता है। जम्बू स्वामी की बातें उसके कानों में पड़ रही हैं। उनकी बातों से वह सांसारिक असारता का अहसास करता है। द्वितीय दिन जम्बू कुमार एवं आठो पत्नियों के साथ प्रभव चोर भी अपने ५०० अनुचरों के साथ भगवान महावीर के शिष्य सुधर्मा स्वामी से दीक्षित हो जाते हैं। सुधर्मा स्वामी के पश्चात् जम्बू स्वामी एवं जम्बू स्वामी के पश्चात् प्रभव पट्टधर होते हैं।

(२०) चेटक और कुणिक का युद्ध (६२"×१७") : इस चित्र में जैन सूत्रों में वर्णित शीलकण्टक युद्ध दिखाया गया है। इस युद्ध में कुणिक (अजात-शत्रु) वैशाली ध्वंश कर रहे हैं। युद्ध क्षेत्र के एक अंश में सन्ध्या हो जाने के कारण वैशाली राज चेटक हाथी से उतरकर प्रतिक्रमण कर रहे हैं।

(२१) भगवान पार्श्वनाथ और महावीर का उपसर्ग (६५"×१६।।") : चित्र के मध्य में कमठ (मेघमाली) वारिवर्षण कर पार्श्वनाथ को डूबो देना चाहता है। जल नथुनों तक आ गया है। दाहिनी ओर धरणेन्द्र पद्मावती पार्श्वनाथ को उठाए हुए हैं। नागकुमार पार्श्वनाथ की भक्ति कर रहे हैं। बायीं ओर भगवान महावीर के कानों में कीलें गाड़ी जा रही हैं। वैद्य खरक महावीर के कान से कीलें बाहर कर उन्हें आरोग्य कर रहे हैं।

(२२) भरत बाहुबली युद्ध (६४"×१२") : आदि तीर्थंकर ऋषभदेव ने प्रव्रज्या ग्रहण करने के पूर्व अपना राज्य १०० पुत्रों में विभक्त कर दिया था। ज्येष्ठ पुत्र भरत को अयोध्या (विनीता) का राज्य मिला था। परन्तु वे इससे सन्तुष्ट न होकर चक्रवर्ती बनने के लिए अपने भाइयों को उनकी अधीनता स्वीकार करने के लिए पत्र दिया। ९८ भाई युद्ध न कर राज्य भरत को सौंपकर ऋषभदेव से दीक्षित हो गए। किन्तु बाहुबली युद्ध के लिए प्रस्तुत हो गया। चित्र में अनर्थक लोकक्षय को रोकने के लिए भरत बाहुबली द्वन्द्व युद्ध निश्चित करते हैं। चार प्रकार के द्वन्द्व युद्ध के प्रथम तीन में भरत पराजित होते हैं। शेष मुष्टि युद्ध में बाहुबली भरत का मुष्ठि प्रहार सहन कर खड़े हैं। बाहुबली प्रहार के लिए हाथ उठाते हैं। वे जानते हैं उनका मुष्ठि प्रहार सहन करने की क्षमता भरत में नहीं है। किन्तु तभी उनके मन में आता है तुच्छ राज्य के लिए बड़े भाई की हत्या करना उचित नहीं है। बाहुबली उसी उठी हुई मुष्ठि से भरत पर प्रहार न कर अपने केश उत्पाटित कर श्रमण बन जाते हैं। घोर तपस्या के पश्चात् भी वे केवलज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते हैं। ब्राह्मी सुन्दरी पिता ऋषभदेव से इसका कारण पूछती हैं। ऋषभदेव कहते हैं कि सामान्य से मान के लिए वह केवलज्ञान प्राप्त नहीं कर पा रहा है। ब्राह्मी-सुन्दरी वहाँ जाकर उन्हें मान त्याग को कहती है। जैसे ही बाहुबली अभिमान का परित्याग करते हैं उन्हें केवलज्ञान हो जाता है।

(२३) लेश्या और मधुविन्दु (६५"×१७") : लेश्या—लेश्या का अर्थ है रंग या वर्ण। जीव जिस प्रकार का कार्य करता है वैसा ही उसकी लेश्या का वर्ण या रंग होता है। अतः लेश्या को आत्मा के उत्क्रान्ति की विभिन्न अवस्था भी कहा जा सकता है। लेश्याएँ छः हैं—कृष्ण, नील, कपोत, तेज, पद्म व शुक्ल। लेश्या वृक्ष के माध्यम से विभिन्न लेश्याओं का तात्पर्य रूपक द्वारा समझाया गया है। रूपक है एक वृक्ष में फल लगे हैं। जो कृष्ण लेश्या वाला मनुष्य है वह उस फल के लिए मूल सहित वृक्ष उखाड़ने को तैयार

है। नील लेश्या वाला डाल काटने को, कपोत लेश्या वाला शाखाएँ तोड़ने को, तेज लेश्या वाला फल तोड़ने को, पद्म लेश्या वाला केवल पके फल तोड़ने को प्रस्तुत हैं। किन्तु, शुक्ल लेश्या वाला वृन्त से अलग होकर धरती पर गिरे हुए फल ही ग्रहण करना चाहता है। इस प्रकार उस रूपक द्वारा आत्मा की निम्नतम अवस्था से उच्चतम अवस्था को समझाया गया है।

मधुविन्दु—मधुविन्दु से संसार का स्वरूप दिखाया गया है। एक व्यक्ति राह भूलकर अरण्य में आ गया है उसे देखकर एक जंगली हाथी उसे मारने दौड़ता है। प्राणभय से भाग कर वह एक वटवृक्ष की जटा पकड़ कर लटक जाता है। जहाँ वह लटकता है उसके नीचे एक पुराना कुँआ है। उस कुएँ में दो अजगर और चार सर्प मुँह बाए हुए हैं। ऊपर है एक विशाल मधुमक्खी का छत्ता। मधुमक्खियाँ बाहर आकर उसे डंक मारती हैं। जिस जटा को पकड़ कर वह लटक रहा है उसे दो श्वेत और काले चूहे आकर काट रहे हैं। उधर हाथी वृक्ष को ही उखाड़ने को तैयार है। किन्तु ऊपर से जो एक-एक बूंद मधु टपक रहा है उसी के आस्वादन में वह व्यक्ति विभोर हो रहा है और अपने चतुर्दिक फैली विपदा को एकदम भूल रहा है।

उसी समय आकाश पर एक विद्याधर जा रहा है। वह उस व्यक्ति को बचाने के लिए अपने विमान में आने को कहता है किन्तु मधुविन्दु के आस्वाद में वह इतना आसक्त है कि उसकी बात ही नहीं सुनता।

इस चित्र का भाव है कि संसार रूपी अरण्य में मृत्यु रूपी वन हाथी मनुष्य को सदेव मारने को दौड़ रहा है। मनुष्य आयुष्य रूपी वट जटा पर लटक रहा है। शुक्ल और कृष्ण पक्ष रूप काल उस जटा को अनवरत काट रहे हैं। रोग, शोक, जरा रूप मधुमक्खियाँ उसे सर्वदा दंशन करती रहती हैं। जीवन रूपी कुएँ में नरक और तिर्यंच गति रूप अजगर और क्रोध, मान, माया, लोभ चारों विषधर उसे ग्रसने के लिए सदेव ही मुँह बाए रहते हैं। इस घोर विपद और जीवन नाश की आशंका के मध्य भी मनुष्य सांसारिक भोग-विलास रूपी मधु के आस्वादन में इतना लीन है कि विद्याधर रूपी सद्गुरु के उपदेशों की उपेक्षा कर आयुष्य क्षय हो जाने पर नरक और तिर्यंच गति प्राप्त करता है।

[क्रमशः

श्रीपाल

[पूर्वानुवृत्ति]

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

[स्थान : कौशाम्बी । मन्दिर का वहिर्भाग]

प्रथम नागरिक : आश्चर्य ! महान् आश्चर्य !

द्वितीय नागरिक : क्या आश्चर्य ?

प्रथम नागरिक : सिद्धचक्र की महिमा ।

द्वितीय नागरिक : सिद्धचक्र की महिमा ?

प्रथम नागरिक : कहाँ रहते हो तुम ?

द्वितीय नागरिक : क्यों ? कौशाम्बी में ही तो रहता हूँ ।

प्रथम नागरिक : मुझे तो नहीं लगता । नहीं तो सिद्धचक्र के प्रभाव से मालव राजकन्या मैना सुन्दरी ने अपने पति को रोगमुक्त कर दिया, इतना ही नहीं उनके सात सौ अनुचरों को भी रोग-मुक्त किया यह खबर तुम सुनते नहीं ?

तृतीय नागरिक : अब तो यह भी जाना गया है कि उम्बर राणा कोई साधारण पुरुष नहीं चम्पाधिपति सिंहरथ के पुत्र हैं । उनका नाम है श्रीपाल ।

द्वितीय नागरिक : अच्छा ! कैसे मालूम हुआ यह सब ?

प्रथम नागरिक : कैसे क्या, श्रीपाल की माँ से ही मालूम हुआ ।

द्वितीय नागरिक : श्रीपाल की माँ से ! वह यहाँ कहाँ से आ गयीं ?

तृतीय नागरिक : वही तो तुम्हें बता रहा था—

प्रथम नागरिक : सिंहरथ की मृत्यु के पश्चात् श्रीपाल के काका ने जब चम्पा राज्य अधिगत कर लिया तब श्रीपाल की माँ ने श्रीपाल के साथ रात्रि के समय चम्पा का परित्याग कर दिया था । तदुपरान्त, आत्म-रक्षा के लिए उन्हें कोढ़ियों के दल में सम्मिलित होना पड़ा ।

तृतीय नागरिक : वहाँ श्रीपाल को भी वह रोग हो गया ।

प्रथम नागरिक : तब वे श्रीपाल को उनके हाथों सौंपकर स्वयं वैद्य की खोज

में निकल पड़ीं। विभिन्न देशों में घूमने के पश्चात् कल यहाँ पहुँची हैं।

तृतीय नागरिक : और इसी मन्दिर में उनसे मिलीं। अपने पुत्र को पहचानते ही उसे छाती से लगा लिया।

प्रथम नागरिक : और यह सब हुआ सिद्धचक्र के प्रभाव से।

द्वितीय नागरिक : सचमुच ही सब कुछ बड़ा आश्चर्यजनक है!

चतुर्थ नागरिक : अभी इससे भी बड़ा आश्चर्य तो बाकी ही है।

समस्त लोग : क्या! क्या है वह ?

चतुर्थ नागरिक : हमारे राजा पुण्यपाल मैना सुन्दरी की माँ रूपसुन्दरी के भाई हैं।

प्रथम नागरिक : हाँ, हाँ यह तो विदित है।

चतुर्थ नागरिक : मालवपति के मैना सुन्दरी का विवाह उम्बर राणा से करने से क्रोधित होकर वे कौशाम्बी चली आईं। कल सन्ध्या के समय इसी मन्दिर में उनका मैना से मिलना हो गया। पहले तो वे उस पर बहुत रुष्ट हुईं। किन्तु बाद में देवोपम जँवाई का यथार्थ परिचय प्राप्त कर उन्हें राज-प्रासाद में ले गईं।

द्वितीय नागरिक : सचमुच ही सब कुछ कितने आश्चर्यजनक ढंग से घटित हुआ।

प्रथम नागरिक : वह देखो—देव-दर्शनार्थ कुमार इधर ही आ रहे हैं।

द्वितीय नागरिक : देखें, देखें।

[सब एक ओर हट जाते हैं। कुमार प्रवेश करते हैं। दूसरी ओर से एक लड़की के साथ एक स्त्री आती है। श्रीपाल के बगल से गुजरते ही लड़की माँ से पूछती है]

लड़की : माँ! यह इतना सुन्दर पुरुष कौन है? विद्याधर है या चक्रवर्ती ?

औरत : तुझे नहीं मालूम? ये हमारे राजा के जँवाई हैं।

द्वितीय दृश्य

[पुण्यपाल का अन्तःपुर। श्रीपाल एकाकी बैठे चिन्ता-मग्न हैं]

श्रीपाल : राजा का जँवाई! मेरे रूप-गुणों का तो कोई परिचय ही नहीं! धिक्कार है मेरे पौरुष को। कहते हैं जो अपने नाम

से परिचित होते हैं वे ही श्रेष्ठ पुरुष होते हैं, जो पिता के नाम से परिचित होते हैं वे मध्यम, जो मामा के नाम से प्रसिद्ध होते हैं वे अधम और जो श्वसुर के नाम से परिचित होते हैं वे अधमाधम होते हैं। धिक्कार है मुझे! शत-शत बार धिक्कार कि मैं अपने श्वसुर के नाम से परिचित हूँ। नहीं, अब मैं एक मुहूर्त के लिए भी यहाँ नहीं रहना चाहता। मुझे तो स्व-नाम से ही परिचित होना है, विद्या, धन, कीर्त्ति अर्जित कर श्रेष्ठ बनना है। ....कौन ?

[कमलप्रभा, रूप सुन्दरी, पुण्यपाल एवं मैना सुन्दरी का प्रवेश]

कमलप्रभा : क्या हुआ बेटे ? शरीर तो स्वस्थ है न ?

श्रीपाल : हाँ माँ ! शरीर से तो स्वस्थ ही हूँ।

कमलप्रभा : तब अवश्य ही तू मन से अस्वस्थ है।

रूप सुन्दरी : लगता है कहीं कुछ घटित हुआ है।

पुण्यपाल : हाँ मुझे भी कुछ ऐसा ही लग रहा है। अवश्य ही कहीं कुछ हुआ है। कैसे हो रहे हो, खोए-खोए से, उदास-उदास से। बताओ न क्या हुआ है ? [फिर कुछ सोचकर] चम्पाराज्य को हस्तगत करने की चिन्ता लगी है क्या ? उसके लिए तो अभी सेना सुसज्जित करवा देता हूँ।

श्रीपाल : चम्पा राज्य तो हस्तगत करना ही है, किन्तु आपकी सहायता से नहीं, अपनी भुजाओं के बल से और इस कार्य के लिए प्रथम चाहिए धन। मेरी इच्छा धनोपार्जन के लिए विदेश जाने की है, अन्य देशों में भ्रमण करने की है। अभी मुझे बहुत कुछ देखना-सीखना है।

पुण्यपाल : लेकिन उसकी आवश्यकता ही क्या है ? मेरे तो कोई पुत्र है ही नहीं। अतः यह राज्य और सम्पदा तो एक दिन तुम्हारी ही होगी। फिर विदेश जाकर व्यर्थ कष्ट उठाने से क्या लाभ ? मेरी समस्त सम्पत्ति का उपयोग तुम कर सकते हो।

श्रीपाल : वह सब कुछ मैं जानता हूँ। किन्तु नहीं, मुझे जो कुछ करना है अपने पुरुषार्थ से। नहीं तो लोग कहेंगे मैंने श्वसुर

की सहायता से पितृ राज्य पुनः प्राप्त किया जो कि क्षत्रियों के लिए सर्वथा निन्दनीय है, मृत्यु से भी अधिक यन्त्रणा-दायक है। अतः आप मुझे सहर्ष विदेश जाने की अनुमति प्रदान करें।

कमलप्रभा : ठीक ही तो कह रहा है श्रीपाल। जो कुछ कह रहा है वही वीरोचित है, क्षत्रियोचित है। [श्रीपाल की ओर मुड़कर] पर मुझे भी यात्रा में साथ लेकर चलना होगा। मेरा तो तू ही एक मात्र जीवन धन है। तुझसे बिछुड़ कर दूर रहना मैं नहीं चाहती।

श्रीपाल : नहीं माँ, यह अनुचित है। विदेश में तुम्हें साथ लिए कहाँ-कहाँ फिरता रहूँगा। स्वच्छन्दता पूर्वक कोई कार्य भी नहीं कर पाऊँगा। अब कोई छोटा थोड़े ही हूँ कि तुम्हें मेरी इतनी चिन्ता करनी पड़े। मुझे तो बस आवश्यकता है तुम्हारे आशीर्वाद की।

कमलप्रभा : आशीर्वाद तो मेरा तेरे साथ ही है, किन्तु, अब मैं तेरे बिना रह नहीं सकती। कम दुःख उठाएँ हैं क्या जीवन में? [अश्रु विसर्जन करती है]

श्रीपाल : दुःखों के अवसान के लिए ही तो यह सब करना पड़ रहा है माँ! जब मैं कुष्ठ रोग से आक्रान्त हो गया था तो तुम्हें औषधि के सन्धान में मुझे कोढ़ियों के पास छोड़कर जाना पड़ा था कि नहीं? इसबार भी माँ, मेरे कल्याण के लिए कुछ दुःख और सहन कर लो।

कमलप्रभा : ठीक है बेटा, तब वैसा ही होगा। जहाँ तक हो सके शीघ्र से शीघ्र आने की कोशिश करना। विपद्-आपद् में सिद्ध-चक्र का स्मरण सदैव करना।

मैना सुन्दरी : आर्यपुत्र, मैं तो आपके साथ ही चलूँगी। मुझे छोड़कर आप नहीं जा सकते।

श्रीपाल : क्या तुम नहीं जानती विदेश में विपद् ही विपद् है?

मैना सुन्दरी : जो विपद् आप सह सकते हैं उसे मैं भी सह सकती हूँ। साथ रहकर आपकी सेवा तो कर ही सकूँगी।

श्रीपाल : नहीं मैना। तुम यदि साथ रहोगी तो निरन्तर तुम्हारी चिन्ता मुझे स्वतन्त्रता पूर्वक कुछ नहीं करने देगी। फिर

यह भी तो सोचो—तुम्हारे बिना माँ की सेवा कौन करेगा ?

रूप सुन्दरी : श्रीपाल कुमार ठीक ही तो कह रहे हैं। तुम्हारा जाना किसी हालत में ठीक नहीं होगा। तुम यहीं रहकर सास की सेवा करो।

मैना सुन्दरी : सब ठीक है आर्यपुत्र, जैसा आप सब चाहेंगे वैसा ही होगा।

पुण्यपाल : आखिर वही हुआ जिसकी मुझे आशंका थी। पर जो कुछ हो रहा है मंगल के लिए ही हो रहा है। तुम यशस्वी बनकर लौटो यही मेरी कामना है। जाऊँ, तुम्हारी यात्रा की तैयारी करूँ।

श्रीपाल : उसकी कोई जरूरत नहीं है। मैं अपने साथ किसी को नहीं लूँगा। मेरे साथ रहेगा माँ का आशीर्वाद और यह मेरा खड्ग।

तृतीय दृश्य

[स्थान : समुद्रतट। श्रीपाल एक वृक्ष के नीचे सोए हैं। धवल श्रेष्ठी के दो अनुचर दूर से उन्हें झाँक-झाँक कर देख रहे हैं।]

प्रथम अनुचर : हम जिसकी खोज में थे आखिर वह मिल ही गया। अवश्य ही यह कोई विदेशी है, तभी वृक्ष के नीचे सोया है। और देखो, कितना सुलक्षण है।

द्वितीय अनुचर : जितना सुलक्षण उतना ही तेजस्वी भी है। राजा का आदेश भी हमें पालन करना होगा और श्रेष्ठी की इच्छा भी पूर्ण करनी होगी।

प्रथम अनुचर : [श्रीपाल को झकझोरते हुए] अरे उठ, उठ।

श्रीपाल : [मुड़कर उन्हें देखते हुए] कौन हो तुमलोग ? मेरी नींद में व्याघात क्यों डाल रहे हो ?

प्रथम अनुचर : हम नगर श्रेष्ठी धवल के अनुचर हैं। उन्होंने तुम्हें बुलाया है।

श्रीपाल : भला वे मुझे क्यों बुलाने लगे ? न उनसे मेरा परिचय है, न सम्बन्ध। जाओ यहाँ से, सोने दो मुझे।

प्रथम अनुचर : नींद तो अब श्मशान में जाकर लेना। उन्होंने तुम्हें बुलाया क्या बाँधकर लाने को कहा है। अब तुम्हारी आयु शेष हो गयी है।

श्रीपाल : [झपटकर प्रथम अनुचर के कन्धे पर खड्ग का वार करते हुए] मेरी आयु शेष हुई है या तेरी ?

प्रथम अनुचर : अरे…रे…रे…रे क्या कर रहे हो ? बच गया नहीं तो सिर ही धड़ से अलग हो गया होता। यदि मेरी पत्नी इस दृश्य को देख लेती तो रो-रोकर बेहाल हो जाती। बच गया आज बेचारी का सुहाग।

श्रीपाल : सचमुच ही आज तो तुम उसी के सौभाग्य से बच गए। [खड्ग म्यान में डालते हुए] स्पष्टकया बताओ तुमलोगों का मुझसे क्या प्रयोजन है ?

द्वितीय अनुचर : नहीं, नहीं, हमलोगों को कोई प्रयोजन नहीं है। हमारे प्रभु धवल श्रेष्ठी को तुझसे…नहीं…आपसे प्रयोजन है।

श्रीपाल : कौन है यह धवल श्रेष्ठी ?

प्रथम अनुचर : [गर्दन पर हाथ रखते हुए] आप उन्हें नहीं जानते ? कौशाम्बी के धन कुबेर हैं धन कुबेर।

श्रीपाल : होंगे धन कुबेर, होंगे राजा। पर मुझसे क्या प्रयोजन है ? बिना प्रयोजन जाने मैं नहीं जा सकता।

द्वितीय अनुचर : यदि आप अभय दें तो बताऊँ।

श्रीपाल : बताओ।

द्वितीय अनुचर : वे विदेश यात्रा कर रहे हैं। उनकी नौकाएँ हजार-हजार चेष्टाएँ करने पर भी नहीं चल पा रही हैं। नैमित्तिकों ने बताया है यदि किसी सर्व-सुलक्षणयुक्त पुरुष की बलि दी जाए तो नौकाएँ चल पड़ेंगी।

श्रीपाल : अच्छा, तो इसीलिए तुमलोग मुझे बाँधकर ले जाने आए हो। परन्तु मूर्ख, सिंह को पकड़ा नहीं जाता, न उसकी

बलि दी जाती है। जाओ, यही बात तुम्हारे श्रेष्ठी से कह दो।

[दोनों अनुचर पीछे हटते-हटते भय से भाग निकलते हैं]

श्रीपाल : [स्वगत] कौशाम्बी के धनकुबेर। ऊँह। मेरी बलि देगा! फुः। किन्तु, यदि उससे सम्पर्क करूँ तो हानि क्या है? हो सकता है धन-प्राप्ति में वह मेरा सहायक बन जाए। आखिर मैं निकला तो धनोपार्जन के लिए ही हूँ न? फिर मैंने तो राह में शस्त्रघात निवारिणी और जल तरणी विद्या भी तो प्राप्त कर ही ली है। तब भय कैसा? [दूर से किसी को आते देखकर] कौन आ रहे हैं ये? लगता है इस बार अनुचरों के साथ धवल श्रेष्ठी स्वयं आ रहे हैं।

[अनुचरों सहित धवल श्रेष्ठी का प्रवेश]

श्रीपाल : *क्या आप ही धवल श्रेष्ठी हैं? आपने ही मुझे पकड़ कर* लाने को अनुचर भेजे थे?

धवल : आप अन्यथा न लें। ऐसी बात नहीं है। ये सब ठहरे मूर्ख। मूर्ख क्या महामूर्ख। सर्व सुलक्षणयुक्त पुरुष को कभी बाँध कर लाया जाता है? बलि दी जाती है उनकी? मैंने तो कहा था—कोई सर्वसुलक्षणयुक्त व्यक्ति की खोज करो। मिलने पर मुझे सूचित करना। मैं उन्हें सादर लिवा लाऊँगा। किन्तु, इन सबमें कहाँ है इतनी बुद्धि—लगे आपसे छेड़-छाड़ करने। इनकी ओर से मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। कृपया क्षमा करें। सूर्य-किरणों से भी बालुकणों की चमक आँखों को ज्यादा अखरती है।

श्रीपाल : यह सब तो आप ठीक ही कह रहे हैं—किन्तु सर्व सुलक्षण युक्त पुरुष की सन्धान में आप सब क्यों हैं?

धवल : क्या बताऊँ अब आपको ? बड़ी मुसीबत में फँस गया हूँ। विदेशों में वाणिज्य के लिए जा रहा हूँ। नौकाओं में माल लाद दिया गया है पर····वे तो टस से मस नहीं होतीं। लगता है किसी दुष्ट देव का कोप है। कहते हैं कोई सर्व-सुलक्षणयुक्त पुरुष उनका स्पर्श करें तो वे चल पड़ेंगी। इसीलिए ऐसे व्यक्ति की खोज कर रहे थे। कृपया आप हमलोगों के साथ चलकर हमारा दुःख दूर करें। आपके इस कष्ट के लिए हम आपके चिर ऋणी रहेंगे।

श्रीपाल : खैर ! ऐसी तो कोई बात नहीं है। फिर भी यदि मैं आपकी नौकाएँ चलाने में समर्थ हो पाया तो आप मुझे क्या देंगे ?

धवल : आपको मैं क्या दूँगा ? जो कुछ भी दूँगा वह कम ही होगा। फिर भी एक लाख सुवर्ण तो दे ही दूँगा।

श्रीपाल : तब ठीक है चलिए। मैंने तो आपकी शर्त मान ली। अब आप भी मेरा एक अनुरोध स्वीकृत कीजिए। मैं भी धनोपार्जन के लिए ही निकला हूँ। अतः यदि मुझे भी अपने साथ ले लें तो अच्छा रहता।

धवल : [प्रसन्नता से] अवश्य, अवश्य। यह तो मेरा परम सौभाग्य है कि आप जैसा सुलक्षण एवं साहसी व्यक्ति मेरे साथ रहेगा ! मुझे तो आपसे मदद ही मिलेगी। आप सानन्द मेरे साथ चलें।

[क्रमशः

हिन्दी जैन साहित्य

[पूर्वानुवृत्ति]

—नेमीचंद जैन

दैवयोग से कुछ दिनों के उपरान्त वही अंग्रेज किरानी काशी का कलेक्टर होकर आया। इस समय वृन्दावन सरकारी खजान्ची के पद पर आसीन थे। साहब बहादुर ने प्रथम साक्षात्कार के अनन्तर ही इन्हें पहचान लिया और बदला लेने का निश्चय किया। यद्यपि कविवर अपना कार्य बड़ी ईमानदारी, सच्चाई और कुशलता से सम्पन्न करते थे, पर जब अफसर ही विरोधी बन जाए, तब कितने दिनों तक कोई बच सकता है। आखिर एक जाल बनाकर अंग्रेज ने इन्हें तीन वर्ष के लिए जेल की सजा दे दी।

कुछ दिनों के पश्चात् एक दिन प्रातःकाल ही कलक्टर साहब जेल का निरीक्षण करने गये। वहाँ उन्होंने कवि को एक कोठरी में पद्मासन लगाए निम्न स्तुति पढ़ते देखा—

हे दीनबन्धु श्रीपति करुणानिधानजी
अब मेरी व्यथा क्यों न हरो बार क्या लगी।

इस कविता को सुनकर अंग्रेज बहुत प्रसन्न हुआ और उसने इन्हें कारागृह से मुक्त कर दिया। वृन्दावन आशु कवि थे। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ 'प्रवचन-सार', 'तीस चौबीसी पाठ', 'चौबीसी पाठ', 'छन्द शतक' 'अर्हत्पासा केवली' और 'वृन्दावन विलास' उपलब्ध हैं।

विनोदीलाल भी इस युग के यशस्वी कवि हैं। इनकी रचनाओं में 'बारह-मासा नेमि राजुल', 'नेमि विवाह' आदि रचनाएँ अधिक लोकप्रिय हैं। तपश्चरण के लिए गए हुए अपने पति को राजुल द्वादश मासों के रम्य प्राकृतिक चित्रण द्वारा विचलित करने की चेष्टा करती है। नेमिकुमार राजुल के रागात्मक वचनों का वैराग्य के द्वारा उत्तर देते हैं। वार्तालाप बहुत ही सरस है :

पिय लागेगो चैत-वसंत सुहावनों, फूलैंगी बेल सबै बनमाहीं।
फूलैंगी कामिनी जाको पिया घर, फूलैंगी फूल सबै बनराई ॥
खेलहिंगें ब्रज के वन में सब, बाल-गुपाल रु कुंवर कन्हाई।
नेमि पिया उठ आवो घरै तुम, काहे को करहो लोग हँसाई ॥

बुधजन—इनका पुरा नाम बिरधीचन्द था। ये जयपुर निवासी खण्डेलवाल जैन थे। इनका समय अनुमानतः १६ वीं शती का मध्य भाग है। इनके द्वारा विरचित चार ग्रन्थ उपलब्ध हैं—'तत्त्वार्थ बोध', 'बुधजन सतसई', 'पंचास्तिकाय' और 'बुधजन विलास'। इनकी भाषा पर मारवाड़ी प्रभाव है। 'बुधजन सतसई' सरस और नीतिपूर्ण रचना है। इसमें देवानुराग शतक, सुभाषित नीति, उपदेशाधिकार और विराग भावना ये चार प्रकरण हैं। प्रथम देवानुराग शतक में कवि बुधजन ने दास्य भाव की भक्ति अपने आराध्य के प्रति प्रकट की है। यद्यपि वीतरागी प्रभु के साथ इस भावना का सामंजस्य नहीं बैठता, तो भी भक्ति के अतिरेक के कारण कवि ने अपने को दास के रूप में उपस्थित किया है। आत्मालोचन के साथ जिनेश्वर के महात्म्य को व्यक्त करना कवि का लक्ष्य है। कवि कहता है—

मेरे अवगुन जिन गिनो, मैं औगुन को धाम।
पतित उधारक आप हैं, करो पतित को काम॥

सुभाषित खण्ड में दो सौ दोहे हैं। ये सभी नीति विषयक हैं। लोक मर्यादा के रक्षण के लिए कवि ने हितोपदेश की बातें कहीं हैं।

भारामल फरूखाबाद के निवासी सिंघई परशुराम के पुत्र थे। इनकी जाति खरौआ थी। इन्होंने भिण्ड नगर में रहकर संवत् १८१३ में 'चारू चरित्र' की रचना की है। 'सप्त व्यसन चरित्र', 'दानकथा', 'शीलकथा' और 'रात्रि-भोजन कथा' भी पद्यबद्ध रचनाएँ हैं।

पण्डित डालूराम माधवराजपुर निवासी अग्रवाल थे। इन्होंने संवत् १८६७ में 'गुरुपदेश श्रावकाचार', संवत् १८७१ में 'सम्यक्त्व प्रकाश' और 'अनेक पूजाओं' की रचना की है। कवि दौलत राम हाथरस के रहने वाले पल्लिवाल थे। इनके पिता का नाम टोडरमल था। इनका जन्म वि० सं० १८५५ में हुआ था। इनकी बनाई हुई 'छहढाला' और 'पदसंग्रह' रचनाएँ प्राप्त हैं। 'छहढाला' भाव, भाषा और अनुभूति की दृष्टि से बेजोड़ है।

मनरंगलाल कन्नौज के निवासी पल्लीवाल थे। इनके पिता का नाम कन्नौजीलाल और माता का नाम देवकी था। कन्नौज में गोपालदास नामक एक धर्मात्मा सज्जन निवास करते थे। इनके अनुरोध से ही इन्होंने 'चौबीसी पाठ' की रचना की है। इसके अतिरिक्त इनके 'नेमिचन्द्रिका', 'सप्तव्यसन चरित्र', 'सप्तर्षि पूजा' एवं 'शिखर सम्मेदाचल महात्म्य' भी उपलब्ध हैं। कवि हरिकृष्ण ने सं० १८२६ ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी को 'बुद्धि प्रकाश' नामक काव्य की रचना

की है। इसमें धर्म, वैराग्य और नीति के विषयों का सुन्दर प्रतिपादन किया गया है। दाता और सूम का वार्तालाप तो बहुत ही सुन्दर हुआ है।

बखतराम ने 'मिथ्यात्व खण्डन' और 'बुद्धि विलास' इन दो ग्रन्थों की रचना की है। 'बुद्धि विलास' के आरम्भ में कवि ने जयपुर का इतिहास लिखा है। इस रचना में विविध धार्मिक विषय, दिगम्बर संघ पट्टावली, भट्टारकों तथा खण्डेलवाल जाति की उत्पत्ति आदि वर्णित हैं। इस रचना की समाप्ति कविवर ने मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी सं० १८२७ में की थी[१५]।

पद्य साहित्य के साथ-साथ हिन्दी गद्य साहित्य की धारा भी आदिकाल से ही प्रवाहित होती रही। आरम्भिक गद्य का रूप टीकाओं और वृत्तियों में मिलता है। १७ वीं शती के मध्यभाग में राजमल पाण्डे ने गद्य में समयसार की टीका लिखी। इस टीका की भाषा ढूंढारी है। शैली पण्डिताऊ है।

कविवर बनारसीदास कवि होने के साथ-साथ गद्य लेखक भी हैं। आगरा में बहुत दिन रहने के कारण इनके गद्य की भाषा ब्रजभाषा है। इन्होंने 'परमार्थ वचनिका' और 'उपादान-निमित्त की चिट्ठी' भी लिखी है। इनकी गद्य-शैली व्यवस्थित है। भाषा का रूप निखरा हुआ है और क्रियापद प्रायः विशुद्ध ब्रजभाषा के हैं। संस्कृत के लिख्यते, कथ्यते और उच्यते जैसे कुछ क्रियापद भी इनके गद्य में विद्यमान हैं।

अखयराम श्रीमाल ने संवत् १७८० के आसपास 'चतुर्दश गुणस्थान चर्चा' नामक स्वतन्त्र गद्य ग्रन्थ तथा कई स्तोत्रों की हिन्दी वचनिकाएँ लिखीं। लेखक ने गद्य में अति सैद्धान्तिक विषयों को बड़े ही हृदयग्राह्य ढंग से उपस्थित किया है।

वचनिकाकारों में पाण्डे हेमराज का नाम अग्रगण्य है। इन्होंने सत्रहवीं शतीके अन्तिम पाद में 'प्रवचनसार टीका', 'पंचास्तिकाय टीका' तथा 'भक्तामर भाषा', 'गोम्मटसार भाषा' और 'नयचक्र' की वचनिका में पाँच गद्य रचनाएँ लिखी हैं। इनकी टीकाओं की शैली पुरातन तथा संस्कृत टीकाकारों के अनुसार खण्डान्वय पर आधारित है।

अठारहवीं शती के मध्य में दीपचन्द काशलीवाल का जन्म हुआ। इन्होंने प्राचीन ग्रन्थों का अनुवाद न कर स्वतन्त्र रूप से गद्य ग्रन्थ लिखे। इनकी

(१५) प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ के अन्तर्गत जैन सिद्धान्त भवन, आरा, के कुछ हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थ, पृ० ५०५, तथा हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन, भाग २ का परिशिष्ट पृ० २३५।

'अनुभव प्रकाश', 'चिद्‌विलास', 'गुणस्थानभेद' आदि धार्मिक रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। वसवा निवासी पं० दौलतरामने 'पुण्यास्रव कथाकोष', 'पद्‌म पुराण', 'आदि पुराण' और 'वसुनन्दी श्रावकाचार' इन चार ग्रंथों का गद्य में अनुवाद किया। इनके गद्य को हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध इतिहासकार पं० रामचन्द्र शुक्ल ने अपरिमार्जित खड़ी बोली का गद्य कहा है।

मुनि वैराग्यसार ने संवत् १७५९ में "आठ कर्मनी १०८ प्रकृति" नामक गद्य ग्रंथ की रचना की है। शैली और भाषा दोनों पर अपभ्रंश का पूरा प्रभाव है। न के स्थान पर 'ण', दूसरे के स्थान् पर 'बीजउ' का प्रयोग पाया जाता है।

१९वीं शती के आरम्भ में भूधरदास ने 'चरचा समाधान' नामक गद्य ग्रन्थ लिखा है। यद्यपि इसमें विभक्तियाँ ढूँढारी है, पर भाषा खड़ी बोली के अत्यन्त निकट है।

संवत् १८२० में चेनसुख ने 'शतश्लोकी टीका' और इनसे पहले दीपचन्द ने 'बालतन्त्र-भाषा-वचनिका' लिखी। १९वीं शती के मध्य भाग में 'अंबड चरित' नामक भाषा ग्रन्थ अमर कल्याण ने लिखा। संवत् १८५८ में ज्ञानानन्द ने 'श्रावकाचार' लिखा। इनका गद्य विकसित और विकासोन्मुख है।

१९वीं शताब्दी में ही स्वनामधन्य आचार्य कल्प पं० टोडरमल का जन्म हुआ। इन्होंने अपनी अप्रतिम प्रतिभा द्वारा जैन सिद्धान्त के 'गोम्मटसार', 'लब्धिसार', 'क्षपणासार', 'त्रिलोकसार' और 'आत्मानुशासन' आदि महत्वपूर्ण ग्रंथों की हिन्दी वचनिकाएँ लिखीं। अनुवाद कार्य के अतिरिक्त आपने ढूँढारी भाषा में 'मोक्षमार्ग प्रकाश' की रचना की। यह मौलिक ग्रन्थ भाषा और विषय दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

१९वीं शती में पण्डित जयचन्द ने 'सर्वार्थसिद्धि वचनिका', 'परीक्षामुख वचनिका', 'द्रव्यसंग्रह वचनिका', 'स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा', 'आत्मख्याति समयसार', 'देवागम स्तोत्र वचनिका', 'अष्टपाहुड वचनिका', 'ज्ञानार्णव टीका', 'भक्तामर चरित्र', 'सामयिक पाठ', 'चन्द्रप्रभ' काव्य के द्वितीय सर्ग की टीका, 'पत्र परीक्षा वचनिका' आदि ग्रंथ लिखे।

२०वीं शती के प्रारम्भ में पं० सदासुख, पं० भागचन्द, चम्पाराम, जौहरीलाल शाह, फतेहलाल, शिवचन्द्र एवं शिवजीलाल आदि कई टीकाकार हुए।

वर्तमान में जैन लेखक खड़ी बोली में उपन्यास, नाटक, निबन्ध, कथाओं आदि की रचना कर रहे हैं। जैनेन्द्रकिशोर का 'मनोवती', मुनि तिलक विजय

का 'रत्नेन्दु' और पं० गोपालदास का 'सुशीला' उपन्यास इस बीसवीं शती के प्रारम्भ की श्रेष्ठ रचनाएँ हैं ।

हिन्दी जैन साहित्य का सर्वेक्षण :

१३वीं शती में रासा और चउपई ग्रंथ लिखे गए। १४वीं शती की सप्तक्षेत्र रास, संघपति समरा रास और कच्छुलि रास प्रमुख रचनाएँ हैं । १५वीं शती में भट्टारक सकलकीर्ति ने आराधना सार प्रतिबोध, विजयभद्र ने गौतम रासा, जिन उदय गुरु के शिष्य और ठक्कर माल्हे के पुत्र विद्षणु ने ज्ञान पंचमी "चउपई और दया सागर सूरि ने धर्मदत्त चरित लिखा। १६वीं शती में ब्रह्म जिनदास ने आदि पुराण, श्रेणिक चरित, सम्यक्त्वरास, यशोधररास, धनपालरास, व्रतकथाकोश, दशलक्षणव्रत कथा, सोलहकारण, चन्दन षष्ठी, मोक्ष सप्तमी, निर्दोष सप्तमी कथा आदि ग्रन्थ रचे। इसी शताब्दी में चतरुमल ने नेमीश्वर गीत और धर्मदास ने धर्मोपदेश श्रावकाचार रचा।

हिन्दी जैन साहित्य के विकास के लिए सत्रहवीं शताब्दी विशेष महत्व की है। इस शती में गद्य और पद्य दोनों में साहित्य लिखा गया है। महाकवि बनारसीदास, रूपचन्द्र और रायमल जैसे श्रेष्ठ कवियों को उत्पन्न करने का गौरव इसी शती को है। इनके अतिरिक्त त्रिभुवन दास, हेमविजय, कुंवरपाल और उदयराजपति की रचनाएँ भी कम गौरवपूर्ण नहीं है। गद्य लेखकों में पाण्डे राजमल्ल एवं अखराज की रचनाएँ प्रमुख हैं। राजभूषण ने लोकनिराकरण रास, ब्रह्मवस्तु ने पार्श्वनाथ रास, मुनि कल्याण कीर्ति ने होली प्रबन्ध, नयनसुख ने मेघ महोत्सव, हरिकलश ने हरिकलश, रूपचन्द्र ने परमार्थ दोहा शतक, परमार्थ गीत, पदसंग्रह, गीत परमार्थी, पंचमंगल, नेमिनाथ रासो, रायमल ने हनुमन्त कथा, प्रद्युम्न चरित, सुदर्शन रासो, निर्दोष सप्तमी व्रतकथा, नेमिश्वर रासो, श्रीपाल रासो, भविष्यदत्त कथा, त्रिभुवनचन्द्र ने अनित्य पंचाशत् प्रस्तावक दोहे, षट्द्रव्य वर्णन और फुटकर कवित्त, बनारसीदास ने बनारसी विलास, नाटक समयसार, अर्द्धकथानक, नाममाला, कल्याणदेव ने देवराज वच्छराज चउपई, मालदेव ने भोजप्रबन्ध, पुरन्दरकुमार चउपई, पाण्डे जिनदास ने जम्बू चरित, ज्ञान सूर्योदय, पाण्डे हेमराज ने प्रवचनसार टीका, पंचास्तिकाय टीका, भाषा भक्तामर, विद्या कमल ने भगवती गीता, मुनि लावण्य ने रावण मन्दोदरी संवाद, गुणसूरि ने ढोलासागर, लूणसागर ने अंजनासुन्दरी संवाद, मानशिव ने भाषा कवि रसमंजरी, केशवदास ने जन्म प्रकाशिका, जटमल ने

बावनी गोरा बादल की बात, प्रेम विलास चौपई, हंसराज ने हंसराज, ज्ञान-भूषण ने आदीश्वर फागु, भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति ने नेमीश्वर चन्द्रायण, वेल्ह ने पंचेन्द्रिय बोल, समयसुन्दरगणि ने मृगावती चरित, कुशललाभगणि ने माधवानल चौपई एवं ब्रह्मरायमल्ल ने श्रीपाल रास की रचना की।

अठारहवीं शताब्दी में हेम ने छंद मालिका, केसरकीर्ति ने नाम रत्नाकर, विनयसागर ने अनेकार्थ नाममाला, कुंवर कुशाल ने लखपति जयसिन्धु, मान ने संयोग द्वात्रिंशिका, कवि विनोद ने फुटकर पद, उदयचन्द्र ने अनूप रसाल, उदयराज ने वैद्य विरहिणी प्रबन्ध, मानसिंह विजयगच्छ ने राजविलास, सुबुद्धि विजय ने प्रतापसिंह का गुण वर्णन, जगरूप ने भावदेव सूरिरास, लक्ष्मी-बल्लभ ने कालज्ञान, धर्मसिंह ने कुंभक्रिया, समरथ ने रसमंजरी, रामचन्द्र ने रामविनोद, दीपचन्द्र ने वैद्यसागर बालतन्त्र की भाषा वचनिका, जयधर्म ने शकुन प्रदीप, रामचन्द्रने सामुद्रिक भाषा, नगराज ने सामुद्रिक भाषा, लालचन्द्र ने स्वरोदय भाषा टीका, रत्नशेखर ने रत्न परीक्षा, लक्ष्मीचन्द्र ने आगरा गजल, खेतल ने उदयपुर गजल, चित्तौड़ गजल, मनरूप विजय ने जूनागढ़ वर्णन, उदयचन्द ने बीकानेर गजल, दुर्गादास ने मरोट, किशन ने कृष्ण बावनी, केशव ने केशव बावनी, जिनहर्ष ने जसराज बावनी, लक्ष्मी बल्लभ ने हेमराज बावनी, जिनहर्ष ने उपदेश छत्तीसी सवैया, भैया भगवतीदास ने ब्रह्मविलास, द्यानतराय ने धर्मविलास, आगम विलास, शिरोमणि दास ने धर्मसार, बुलाकीदास ने महाभारत, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार, पं० श्यामलाल ने सामायिक पाठ, विनोदीलाल ने श्रीपाल चरित, पं० लक्ष्मीसागर ने यशोधर चरित, धर्म प्रबोध, पं० शिवलाल ने चर्चा सागर, भूधरदास ने पार्श्व पुराण, जैन शतक, पदसंग्रह, आनन्दघन ने आनन्द बहत्तरी, यशोविजय ने जय विलास, विनयविजय ने विनय विलास, किशनसिंहने क्रियाकोश, भद्रबाहु चारित, रात्रि भोजन कथा, मनोहरलाल ने धर्म परीक्षा, जोधराज गोदीका ने सम्यक्त्व कौमुदी, खुशालचन्द्र काला ने हरिवंश पुराण, पद्म-पुराण, उत्तर पुराण, रूपचन्द ने नाटक समयसार की टीका, पं० दौलतराम ने हरिवंश पुराण की वचनिका, पद्म-पुराण की वचनिका, आदि पुराण की वचनिका, परमात्म प्रकाश की वचनिका, श्रीपाल चरित, क्रियाकोश, खड्गसेन ने त्रिलोक दर्पण, जगतराम ने आगम विलास, सम्यक्त्व कौमुदी, पद्मनन्द पच्चीसी, देवीसिंह ने उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला, जीवराज ने परमात्म प्रकाश की वचनिका, ताराचन्द ने ज्ञानार्णव, विश्वभूषण भट्टारक ने जिनदत्त चरित, हरचन्द ने श्रीपाल चरित, जिनरंगसूरि ने सौभाग्य

पच्चीसी, धर्ममन्दिरयणि ने प्रबोध चिन्तामणि, हंसविजय यति ने कल्प-सूत्र की टीका, ज्ञानविजय यति ने मलय चरित, लाभवर्धन ने उपपदी ग्रंथ, टीकम ने चतुर्दश चउपई, लब्धरुचि ने चन्द्रनृपरास, ब्रह्मजिनदास ने जम्बू स्वामी चरित, अचलकीर्ति ने धर्मरासो एवं परिमल्ल ने श्रीपाल चरित की रचना की है।

उन्नीसवीं शताब्दी में टोडरमल ने गोम्मटसार की वचनिका, त्रिलोकसार की वचनिका, लब्धिसार की वचनिका, क्षपणासार की वचनिका, आत्मानुशासन की वचनिका, द्रव्यसंग्रह की वचनिका, स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा की वचनिका, देवागमस्तोत्र वचनिका, अष्टपाहुड की वचनिका, ज्ञानार्णव की वचनिका, भक्तामर की वचनिका, वृन्दावनलाल ने वृन्दावन विलास, चतुर्विंशति जिनपाठ पूजा, तीस-चौबीसी पूजा पाठ, भूधर मिश्र ने पुरुषार्थ सिद्धि वचनिका, चर्चा समाधान, बुधजन ने तत्त्वार्थ बोध, बुधजन सतसई, पंचास्तिकाय भाषा, बुधजन विलास, दीपचन्द ने ज्ञानदर्पण, अनुभव प्रकाश, अनुभव विलास, आत्मावलोकन, चिद्‌विलास, परमात्मपुराण, स्वरूपानन्द, अध्यात्म पच्चीसी, ज्ञानानन्द ने ज्ञानविलास, समय तरंग, रंगविजय ने गजल, कर्पूरविजय या चिदानन्द ने स्वरोदय, टेकचन्द ने तत्वार्थ की श्रुतसागरी टीका की वचनिका, सुदृष्टतरंगिणी, नथमल विलाला ने जिनगुण विलास, नागकुमार चरित, जीवन्धर चरित, जम्बूस्वामी चरित, डालूराम ने गुरुपदेश श्रावकाचार, सम्यक्त्व प्रकाश, पूजाएँ, सेवाराम ने हनुमत् चरित्, शान्तिनाथ पुराण, भविष्यदत्त चरित, देवीदास ने परमानन्द विलास, प्रवचनसार टीका, चिद्‌विलास वचनिका, चौबीसी पाठ, भारामल ने चारुदत्त चरित, सप्तव्यसन चरित, दानकथा, शीलकथा, रात्रिभोजन कथा, गुलाबराय ने शिखर विलास, थानसिंह ने सुबुद्धिप्रकाश, नन्दलाल छावड़ा ने मूलाचार की वचनिका, मन्नालाल सांगाकार ने चरित्रसागर की वचनिका, मनरंगलाल ने चौबीसी पूजा पाठ, नेमिचन्द्रिका, सप्तव्यसन चरित, सप्तर्षि पूजा, षट्कर्मोपदेश रत्नमाला, वरांग चरित, विमलनाथ पुराण, शिखर विलास, सम्यक्त्व कौमुदी, आगमशतक, अनेक पूजा ग्रन्थ, चेतन विजय ने लघुपिंगल, आत्मबोध, नाममाला,

मेघराज ने छन्द प्रकाश, उदयचन्द ने छन्द प्रबन्ध, उत्तमचन्द ने अलंकार आशय भण्डारी, क्षमा कल्याण ने अंबड चरित, जम्बू कथा, ज्ञानसागर ने माला पिंगल, कामोद्दीपन, पूरब देश वर्णन, चन्द चौपाई समालोचना, निहाल बावनी, मूलकचन्द ने वैद्य-हुलास, मेघ ने मेघ विनोद, मेघमाला, गंगाराम ने लोलिम्ब राजभाषा, सूरत प्रकाश, भावनिदान, चैनसुखदास ने शतश्लोकी की भाषा टीका, रामचन्द्र ने अवयविद्या शकुनावली, तत्वकुमार ने रत्न परीक्षा, गुरु विजय ने कापरड़ा, कल्याण ने गिरनार सिद्धाचल गजल, भक्त विजय ने भावनगर वर्णन गजल, मनरूप ने मेड़ता वर्णन, पोरबन्दर वर्णन, सोजत वर्णन, रघुपतिने जैन सार बावनी, निहाल ने ब्रह्मबावनी, चेतन ने अध्यात्म बाराखड़ी, सेवाराम शाह ने चौबीसी पूजा पाठ, यति कुशलचन्द्र गणि ने जिनवाणीसार, हरिजसराय ने साधु गुणमाला, देवाधिदेव स्तवन, क्षमा कल्याण पाठक ने साधु प्रतिक्रमण विधि, श्रावक प्रतिक्रमण विधि एवं विजय कीर्ति ने श्रेणिक चरित की रचना की है।

विक्रम की २० वीं शती के प्रारम्भ में एवं ई० सन् की १९ वीं शती के में पं० सदासुख ने रत्न-करंड श्रावकाचार की टीका, समयसार की टीका, नित्य पूजा की टीका, भागचन्द ने ज्ञान सूर्योदय उपदेश सिद्धान्त रत्न-माला, अमितगति श्रावकाचार टीका, प्रमाण परीक्षा टीका, नेमिनाथ पुराण, दौलतराम ने छहढाला, मुनि आत्माराम ने जैन तत्वादर्श, तत्वनिर्णय प्रसार, अज्ञानतिमिर भास्कर, चम्पाराम ने गौतम परीक्षा, वसुनन्दी श्रावकाचार टीका, चर्चासागर और योगसागर, छत्रपति ने द्वादशानुप्रेक्षा, मनमोदन पंचासिका, उद्यम प्रकाश और शिक्षा प्रधान, नन्दराम ने योगसार वचनिका, यशोधर चरित और त्रिलोकसार पूजा एवं नाथूराम दोशी ने सुकुमाल चरित, सिद्धि-प्रिय स्तोत्र, महीपाल चरित, रत्नकरण्ड श्रावकाचार की टीका, समाधि तन्त्र की टीका, दर्शनसार टीका, परमात्म प्रकाश टीका लिखी है। हिन्दी जैन साहित्य के विकास का यह क्रम उत्तरोत्तर विकसित होता जा रहा है। बीसवीं शती में अनेक विद्वान इस साहित्य की सेवा में संलग्न हैं।

जैन पत्र-पत्रिकाएँ कहाँ/क्या

अमर भारती ।। सितम्बर १९८०

उपाध्याय श्री अमर मुनि के प्रवचनों के अतिरिक्त इस अंक में है 'पर्युषण पर्व : एक विवेचन' (डा० उम्मेदमल मुनोत), 'पर्युषण : गुण-दर्शन का मंगल पर्व' (साध्वी श्री चन्दना), 'पर्युषण : तब और अब' (मुनि श्री समदर्शी 'प्रभाकर') ।

कथालोक ।। सितम्बर १९८०

इस अंक में है काव्य नाटक 'नेमिप्रव्रज्या' (गणेश ललवानी) ।

श्रमण ।। सितम्बर १९८०

इस अंक में है 'पर्युषण' (श्री मधुकर मुनि), 'साधना में श्रद्धा का स्थान' (आचार्य श्री आनन्द ऋषि), 'पर्वराज दस लक्षणी' (पर्युषण पर्व) (गणेश प्रसाद जैन) ।

श्रमणोपासक ।। सितम्बर १९८०

आचार्य श्री नानालाल जी के प्रवचनों के अतिरिक्त इस अंक में है 'युवापीढ़ी की मानसिकता और महापर्व पर्युषण' (संजीव भानावत), 'पर्युषण पर्व के संदर्भ में : तब हम क्या करें ?' (डा० राजेन्द्र कुमार बंसल) ।

Vol. IV No. 6 : Titthayara : October 1980
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. R. N. 30181/77

Hewlett's Mixture
for
Indigestion

DADHA & COMPANY

and

C. J. HEWLETT & SON (India) PVT., LTD.

22 STRAND ROAD

CALCUTTA-700001